

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करें सनमान ।  
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमंत संत हितकारी ।  
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥०१॥

जन के काज विलम्ब न कीजै ।  
आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥०२॥

जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा ।  
सुरसा बढ पैठि विस्तारा ॥०३॥

आगे जाई लंकिनी रोका ।  
मारेहु लात गई सुर लोका ॥०४॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा ।  
सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥०५॥

बाग उजारी सिंधु महं बोरा ।  
अति आतुर यम कातर तोरा ॥०६॥

अक्षय कुमार मारि संहारा ।  
लूम लपेट लंक को जारा ॥०७॥

लाह समान लंक जरि गई ।  
जय जय धुनि सुर पुर महं भई ॥०८॥

अब विलम्ब केहि कारण स्वामी ।  
कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥०९॥

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता ।  
आतुर होय दुख हरहु निपाता ॥१०॥

जै गिरिधर जै जै सुखसागर ।  
सुर समूह समरथ भटनागर ॥११॥

ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले।  
बैरिहिं मारू बज्र की कीले ॥१२॥

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो ।  
महाराज प्रभु दास उबारो ॥१३॥

ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो ।  
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥१४॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा ।  
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥१५॥

सत्य होहु हरि शपथ पाय के ।  
रामदूत धरु मारु धाय के ॥१६॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा ।  
दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥१७॥

पूजा जप तप नेम अचारा ।  
नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥१८॥

वन उपवन, मग गिरि गृह माहीं ।  
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥१९॥

पांय परों कर जोरि मनावौं ।  
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥२०॥

जय अंजनि कुमार बलवन्ता ।  
शंकर सुवन वीर हनुमंता ॥२१॥

बदन कराल काल कुल घालक ।  
राम सहाय सदा प्रति पालक ॥२२॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।  
अग्नि बेताल काल मारी मर ॥२३॥

इन्हें मारु तोहिं शपथ राम की ।  
राखु नाथ मरजाद नाम की ॥२४॥

जनकसुता हरि दास कहावौ ।  
ताकी शपथ विलम्ब न लावौ ॥२५॥

जय जय जय धुनि होत अकाशा ।  
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥२६॥

चरण शरण कर जोरि मनावौ ।  
यहि अवसर अब केहि गौहरावौं ॥२७॥

उठु उठु चलु तोहिं राम दुहाई ।  
पांय परों कर जोरि मनाई ॥२८॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता ।  
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥२९॥

ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल ।  
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥३०॥

अपने जन को तुरत उबारो ।  
सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥३१॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै ।  
ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥३२॥

पाठ करै बजरंग बाण की ।

हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥३३॥

यह बजरंग बाण जो जापै ।  
तेहि ते भूत प्रेत सब कांपे ॥३४॥

धूप देय अरु जपै हमेशा ।  
ताके तन नहि रहै कलेशा ॥३५॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।  
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥